नं० १०३६-घ

भाषा स्वरोदयः (ज्योतिषम्)

पत्राणि १५ (सम्पूर्णम्)

नं० १०३६-घ

२५ पत्रे

स्वरों श्रीगणेशायनमः ॐनमोनमः ॐअवगतउतपतलेंआं ॐउतपततेंआका
१ शा आकाशाउतपततेंवायु वायुउतपततेतेज तेजउतपततेंतोय तोयउतपतते
मही महीरूपदेवीकोरंग जलरूपब्रह्माकोवने तेजरूपविष्णुकीमाया पवने
रूपईश्वरकीमाया आकाशरूपनादकीबाया सोनादअवगतउपाया शून्य
निरंजनभूचरदेवा याभूचरकोलखेनभेया अकलतरवरसुरसुककलवाया
हि स्यामवेदभेदनैभेदा अध्यातमध्यानब्रह्मज्ञान खेचरीमुद्राकोचनीसिद्ध अगो
चरीबुद्ध अनभयक्रामात अतीतदेयताअवगतपूजा अनिलआत्ममअध्या
त्मविद्या गगनआसनअमृतपयाला मनसामाईपंचभूतचेलो मनरावलप लेखाई
वनभोगी सहजेआवनसहजेरहना सुखमनानदीन्हीकेवलजलपीवना त्रि
वेनीअस्नानत्रिकालपूजा अजपागायत्रीअजपामंत्र निरंजनमालानिराका
रज्वाला कमलगरजैतहाहोयउजयाला एकेससहस्रछहसोकरमेला न
खसिकपवनबांधलेमेला अनहदशब्दनहीशब्दबानी जीवतसिद्धहोयगा
प्राली देहीविदेहैअवच लथीर ऊर्ध्वपरलवाहोयगासीर दिष्टविदिष्टजो
इवानेनं पवननिरंजनबोलयावेनं शब्दनहशब्दहोयगाथूलं आरकानादहो
यगामूलं नादबिंदगांठिवागवनआकाशं धरतगगनपरपाराहनहोरजंत्र १
कुरैनहिकालनकोई अखंडउतमउईजोयकाध्यानं युगयुगतालीकथयाज्ञानं

मूलचक्रनतहांपलटैजोई पलटलैकायाथिरहोइकंडू वज्रकछोटीमूवंधावा
पुंकरथीरं उलटउजवानीवाघवावीरं अंम्रतधाराकमंडलहोयगासीरं कुंभ
पातपीयबानीरं चेतनविभूतअंगसरीरं अजरकंथानहिंवारविवारं अनहद
कीगरीबजायवानारं संतोषतिलकतहांपदनिबाणं अलटोपाकमंडलपहारा
यधाध्याने चिपनमनवेरागोमुद्राअरूपं वंदनगोरखनाथयेतत्वअरूपं दोयं
तहांत्रिकुटीध्यान छिमालकुटीटेकवाध्याने चंदसूरभाटीनुजोईवापारं म
रेगा गगनतहांहोइमतवारं तेजोईदजुगतांई त्यागीप्रवर्तेरूनचित्तअनु
रागी जेप्रवर्त्तमेंसदाविलासी तिनेंहिनिरवर्त्तकठिनअभ्यासी जातेंदोनोंसधें
गुसांईसो अवमोहकहोसमुकाई कोईकुकरनसांगीतही गावतकोइकजोत
कयेदहिंध्यावत केतकपंथजुशास्त्रपठही केतककोकग्रंथअनुसरहीके
तकआगममारगलागे केतकरसामुद्रकअनुरागे २३ दोहरा यातेंयेसबग्या
नप्रभुसधेंएकअभ्यास सोसिखदीजेजगतप्रभु कीजेवचनप्रकास २४ ॥
चौपई कहतसंभूसुनगिरिजाप्यारी कहोंसुरोदयग्यानविचारी सुरकेभेदसा
सुजानी सुरकेजोतिककोकवरवानी २५ सुरसंगीतरागजिहिहोई सुरतेंवेदक
लहेजुकोई सुरतेंभेदसमुद्रकजानें सुरतेंआगमवेदवखानें २६ सुरत्रैलोकय
रत्योभरपूर साचेहोइसजीवनमूर स्वरस्वरूपआत्माजानियें उतपतप्रलयसु

स्वरो
२
2

रहितेंमानियें २७ प्रथमप्रथमब्रह्मांडविचारा यहीपिंडकरौविस्तारा जोब्रह्मांड
सोपिंडयरवानो ताकीभाखोंसकलविधानो २८ अस्तद्वीपजेसातकहाए ते
ब्रह्मांडदीपदिरायेदेहरा मांसप्रथवीजानियेंउदरसमुद्रसमान सक्षमनसगि
रउचरोसुरतासीरयरवान २९ चौपई रोमवनस्पतीएकप्रकार क्षुधाअग्नजि
हितेजअपार वसतदेहदृष्टकेआगे जोअदिष्टसोऊजरलागे ३० वायकवदनतें
निकसतजेती स्वनरूपसोजानोंतेती प्रगटदृष्टसोआपसरूप भ्रष्टआदिदृष्ट
स्वरूपकोरूप ३१ रंध्रनासकासूरजचंदा जुगलनेनमुरजानियेमंदा भ्रवणउ
भयगुरमंगलकहिये मुषकोरूपचंदसुतलहिये जागततुल्यअहोकीदीजो नि
द्राभांतनिसाकीलीजो हर्षयसंतदुषपतझार उष्नगातग्रीषमविस्तार ३३ व्या
पसीतहेमंतबषाने रोदुसमानवर्षाऋतुआने वादरहदनदामनीहांसी ग्यानषु
मांनन्नपतपरगासी ३४ दोहा प्रभुकोग्यानवसीयसमवृत्तीग्यानपरधान
पुस्तकध्यानविचारियेंलेवेदश्रुरजांन ३५ परमहंसअंडजकेमांही आतम
रूपतासकोछाही तैसेंपिंडबोलतापुरस कहियेआतमावरनासुरस ३६ आ
तमपिंडवंधनहिहोई लेपअलेपपरहततहेसोई तैसंब्रह्मअंडजमेव्यापी लेपअले २
पनकहतअलापी ३७ परमहंसयोंरहोसमाई ज्योंयहपवनआतमांदेही अंतर
बाहरभीतरकहोनजाई १

बाहरएकगननेही ३८ कठिनलखावेब्रह्मविज्ञान नालषवेकोंआसध्यान देह
मध्यनारीबहुरूप लषेयिचछनलसरूप ३९ नाभिअस्थानकुंडलीभांति रू
पभुजंगनसक्तकहानी नालोसहस्रवहत्तरलाई सकलपिंडमेनाडीभरमोई ४०
दोहा पवनपरसबकोंकरें अर्धऊर्ध्वगतहोई केतीकलीजेगव्हेरहैयिरलारसैको
ई ४१ चोपाई नाडीऊर्ध्वबहेदसतहां दसनाडीअधगमनतजहां तिर्यगनाडीचारी
पुनबहे चतुरविंसंसंख्यापुनलहे ४२ ऐसीतीनआगलीसाठी चक्रअधारहिना
डीगांठी कछूदीरघकछुसूक्षमसमानें नाडीभेदतहांपरमान ४३ जैसेंपत्रलप
त्रकहीजे मध्यमसूक्ष्मअस्थललहीजे तेसबासिरंदेषियतऐसें पीपरपातनीलजा
लजैसें ४४ दसअधपतहे ताकेबिचतीर्यगडूईबहेकछुनीच दसमारुतदसनार
नचले एकएककोंएकनरले ४५ तिनकेनामकहौसमुझाई नाडीसहतभलजेना
भाष नाडी प्रथमइडापरमान दुतीयपिंगलासुक्षमजोजान ४६ गंधारीहस्तिनी
पुषानी नाडीजिव्हाकाजोगनजानी पुषानाडीसप्तमभली अस्मोअलंबुकालि
हारली ४७ कुहुजाऔरसंखिनीतथा वरनोवायुनामगुनयथा प्रानअपानस
मानउधान व्याननागअरुकुरमोजान ४८ दोहा देवदत्तअरुकमेलादसमधनं
जयहोय प्रानांभ्रेसब हैरहीसबैदेहमेमोय ४९ चोपई उत्तमतीनतासमधमांनो

स्वरो॰ ३ 3
इडापिंगलासुषमनजानों बांवेनाडीईडाससिसंगादक्षिण पिंगलासूरजअं
गा ५० नाडीसुषमनअंकररूप परमहंससोईअंमकारूप निर्गमपवनहंका
रकहीजे होतप्रवेससकारकहीजे ५१ सभूहंकारसकारभवांनी सोहंजाप।
जपेसोज्ञानी सकूरूपससवाहप्रवाहा दक्षभानसंभअवगाहा ५२ परमवि
चछनजेकोईजोगी ह्वैसुरसाधेहोयअरोगी छिनबांयेंछिनदक्षिणआवे ना
डीनामसुखमनापावै ५३ तानाडीमेंअगनिवासी ध्यानविनासबकामविना
सी ज्वलताकाररूपसोधरे विषवतनासकाजसबकरे ५४ दोहा तानाडीमेंला
यलैब्रह्मध्यानमनदेई जोसमाधसाधेभलीअनवनसुषतहलेई ५५ चौपई
भाषतगवरसंभप्रतवानी पिंडज्ञानसबकहोबखानी अबसुनेदनासकाभाखे
सोविस्तरनकिंचिराखों ५६ किहिविधतासुसाधनाकीजे वियावाच सुन
सुरविबसुरकोबात जिहिअभ्याससदाहोरास ५७ जोगुनसूरचंदताताइसो
गुनव्यापतमानसपीड लेसुररंध्रनासकादोनों कोटकवामदक्षपुनेको नों ५८
दक्षिणभानचंद्रउत्तरायन पलटेंदुयोआपनेचायन कबहूनालदछनसुरर
है कबहुकवामपावनओगहै ५९ एकठोरदोनोंनहिचलें आपुसमांझकबहू ३
रलें जोकदापिसुरउपजैभारी धावतवेगचढतकोमारी ६० दोहा क्रियाकाम

चिलासवबहुकरलजुवतसोरंगजियपयानतमिलतहोयतरुनाईकेसंग ६१ ॥
चौपई जाकोतपत होयअधिकाई ताकोयाविधपरमसहाई दक्षनरंध्ररुईसो
रोके अहोरैनसुरवामअलोपे ६२ उपजेसीततपनताअसे चंद्रप्रवाहपलअभ्या
सें तपतचंद्रस्वसीतलताई मिटैउभेसुरफेरबहाई ६३ दुतीयभांतसुरफेरनकी
जे जोसुर अलैदिसासोलीजे सोईपानपुहमसोलावे रूप कहुनीताकछुव
लपावे ६४ अंगुरीनहाथभिन्नरवनकीजे कछुइकभारममपरदीजे मारुतआ
नतहांओगहै ६५ ओपुनसयनसमेंइहभांत वद्लैपवनकहतइकवातजोसुर
चलेसयनताकीजे नाडीसुन्यउर्ध्वकोदीजे ६६ दोहा पहुहेपवनउतायकीवहै।
उपरकेअंगतासुरसयनप्रमांन कियकेअबमारुतपंग ६७ चौपई जोकोईदि।
वसचंद्रसुरछांडै सूरजपवनहृदयमेगाडै औससदाभांनओगाहै ऐसीक्रियासदा
निबाहे ६८ तोसबरोगसीथलतातेती असतसीसहृदयपीडाकेती अतअतापअ।
च्यकसीतांगसाधे क्रियाहोयसबभंग ६९ टोनाटामनतहांनबसाई बीछुपन्न
गविषनचढाई तरुनाईतहांअंगप्रगासि हर्षअंनं रतहांअभ्यास ७० होयनसेत
केसजेकारे होयकछमजेवारउकारे दिनमयंककोपानहीकरई रेनदिवाकरको
अनुसरई ७१ वहेआवजवलगससतारा ज्योंअकापुनभानउजारा जामिनइडा

स्वरों बहननहिंदीजे दिवसपिंगलावरजनकीजे ७२ दोहा भोजनअरुअस्ना।
४ नकोदक्षननाउप्रमान बरीचारसुरफेरफेरके अधकनदीजेजांन ७३ चौप
५ ई होयसूररससएकअवास मध्यब्रह्मांडपछमपरगास ताकेअंडजप्रलयकों
पावै स्वर्गभ्रमसवलोकनसावै ७४ तेसैंपिंडउभयइकसांधनासदेहचरन।
सेंमाथ मानुषमीचहोयजिहीसमैं सूरचंद्रअंतरव्हैरमै जोकोइसंतभागअ
तिभारी सूरचंद्रकोसोअधकारी एकठौरदोउकोराषै सोउमहातमब्रह्मकरभा
षै ७६ प्रथमअरंभकरैइहिरीत करैवचारगुरकेपरतीत वर्षएकलगआस
नसाधै एकतत्तवैठचित्तअराधै ७७ अस्थलउत्तमविन उत्तपात उज्जलहूअं
वरमंजतुगात दुष्टअसाधसंगपरहरै साधूजानकछुसंगतकरै ७८ भोज
नसूक्षमकीजे उज्जलतंदुलसेत मठागायसेंधवलवंग औरनकीजेहेत ७९
चौपई षारोदधजोसुरभीहोई ताकोभक्षलोकरैनकोई जोपुनमठाओरनहि
पावैदधमपानीवहुतरलावैं ताकीसकलअमलताजावैं तापश्चातसिद्धतिह।
ग्यासै एकवर्षकछुओरनचाषै ८१ वैठकआसनविधताहांकही प्रथमकुशा
नपालथीलही जोआसनसाधकभकेजाने तिहीठांवैठध्याननमनआनै ८२ ४
चंद्रसूरकेसनमुषवैठें जोगभ्यासमेचित्तबपैठें नामाअग्रलषेयहरूप ल
लषप्रगटकेतहूदस्वरूप ८३

चक्षु जुगल कलदिवस पिराई गलदिन चालीस फेर ठहराई रूप प्रथम दिष्ट
मगत ह्मा आवै तापाछै रंग पीत दिषावैं ८४ दोहा बहुर चंद्र बोडशा कला।
वदन अग्र दिषराई अरु अनेक जे गोप है प्रगट होयतन हां आई ८५ चौपई फि
र ठोडि अरु सिर कच ताई तेज पुंज रस उदै कराई फिर रविससि दोनों दिखरावै
जोगी सिद्ध अगम की पावै ८६ तहां पसु पंखी मानस मारा साधक दिष्ट जोर
सोइ पारा आपुतन छांड म्रतक तन जाई जीवै म्रतक आप मर जाई ८७ फिर चा
है तो आपतन आवै ताको मंत्र रूप गुरु पद पावै जब यह रूप भाल ठहराई तापी
छे फिर मस्तक जाई ८८ पडु ने रूप मरु इनी माहीं पृथवी परै न साधन की छांहीं
स्वर्ग पताल इष्ट में देषैं देव अपछरा सब को परेखै ८९ जे गुन रूप लछन के रे॥
५९ विद्या मान सब उलषैं लियरे जब ही दृष्टै को जाई सागर सात की बात कहाई ९०
दोहरा दीठ पीठ कौं देषकें उलषै आगि आन स्वर्ग भूप पाताल की सुद्धु परै सब जा
न ९१ चौपई जब वपु अग्र दिष्ट में आवै पूरन ससि फिर प्रगट दिषावै जो सब
विद्या है संसार ते सब तंतहां होय संचार ९२ फिर तहां भानदेई दिषराई होहि मनु
क छु सुपन रहाई आपा छूटै ब्रह्म समाई परवी अलष पों च जाई ९३ एक वर्ष।
यह यतन विचारे आपुन मरै काहु कौं मारै वर्ष एक मे आवे हाथ साधै सिद्ध तजै
सब साथ ९४

मासहिपतअवरूपकहोई एकवारसाधककोंसोई बहुरकामसंसारीकरैं का
हूवालनभयचित्तधरैं ९५ बहुतनयोगीयहमतसाधी ब्रह्मलीनभएल ईस
माधी चालीसदिवसगयेपरगासै चिन्हअलेखतहाअभ्यासै ९६ संसयदुव
धाचित्तनहिंआनै होयअवश्यकसाचकैमानैं ९७ दोहा मोहनयहकरनीकठि
नसुलभभईइहिहेत अलखदाससगुरुपदपरसतेंईद्दीभईसुचेत ९८ चौपई का
मनिरतजोकरैंपुमानो नासाअग्रलषैयहध्याना सुरतकरतचित्तअनतनजा
ई बसेनमदनमोरउपजाई ९९ अथनेत्रजनन सेतफुलीजाकेचषहोई ना
साअग्रध्यानकरसोई लषतस्वरूपचषपलनहिमारैं जुगविसीदिनजुग
तविचारैं १०० मीठफुलीचषनिर्मलताई जबयहक्रियाचित्तठहराई जाकोंति
मिरजोतचक्षुहीन परैनदृष्टस्थलअरुहीन चारोदिसाऊर्ध्वअद्धदेषै नासा
अग्रध्यानपुनपेषै हरैंतिमिरयहजुगतविचारैं शंकरवचनचित्तअवधारैं
२ सदानयनजिहिनीरप्रवाह सोयहजुगतकरैनिर्वाहवेठ ऊआननउदरसंको
चै सिरउर्द्धकरअरुहीनमोचै ३ दोहरा मस्तकग्रीवापीठकटसमताकीजेचा
र वहुवलकेमेघनकरैईडापिंगलानार ४ चौपई वसुजातदिनरअधिकाई
दिनएकैसध्यानठहराई चाहेचक्षुदुषननहिंपावैं सुनगिरीजायहजुगतउपा ५
वैं ५॥

करपररंगसुहरीकरावैं तामधवुंदस्यामचहुल्यावैं मंदिरउत्तमजहानआनां
उभय तिमरउतेरौसमाना ६ पराद्वारअंतरिछ्छबांधे स्यामवुंदकोध्यानअराधैं दीठ
पसारपलकनहिफरकै सीतलनीरनेनतेंढरके ७ नपतनीरतापाछेजलै॥
कछुवककीचरतासंगरलै तवअरोगकोजानैचीन्ह चाहेवरषवरषप्रतकि
न्ह ८ तथाप्रारतकोदुतीयउपाय जातें अधिकमनोरथथाय करतविला।
सअनंगदृयावै कहतकवीमुरवएककोंपावें ९ दोहरा प्रथमतरकेआदहीरो
करहेलघुनीत पुनअडानकेहेठहीकहेकछुयहीरीत १० चोपई अंगुलदोरे
वचडीकरवाम तर्जेनीऔरमध्यमानाम उभयअंगतरदोउगडावैं लिंगपीठ
करदाहनचावै ११ थांभमत्रपाछेंतरमांडे रतकेअंतमत्रकोछाडे मासषां
चलगयहविधठानें प्रथमअरंभहेमरितमानें १२ हेतउखालयहविधउप
जावत ग्रीषमकरे अधिकधिकदुषपावत करतप्रसंगद्रवतजवजाने होई
मिंनगनेविधआनें १४ यहविधप्रथममत्रकोराषा थंभनवीजेतोयहवि
धभाषा होयश्चिथलताइंद्रीरहे पुनहूकठीनकेलरतचहे १५ फिरजानेंजवद्र
वतअनंगा तुरतहीतजे युवतकोसंगा पुनताहीविधध्यानहीधरै वारतीनय
हविधाकरै १६ दोहा जवलगइछ्छाहोयचित्तयुवतभोगवेकंत दिनदिनमास
प्रवाहलगद्रवैनरतके अंग १७

स्वरो ६ अथदसनजुगत दंतकंठनताचाहेकोई उठसवेराप्रातजबहोई अधरभिन्नक
६ रअधरउर्द्धदंत दोवबारत्रयकठनकरंत १८ होठषोलरददोवेराषे भरेलोटसुम
छिनपरनाषे दंतकष्टतापाछेष्याले जबलगजीवेदंतनहाले १९ अथमासबु
द्धजनन दुर्बलसोंजबुद्ध फलेनमास देहेदुषसबरहेहुलास ससमुरप्रातलारज
बलावैनिर्मलहोयमुलासेंनसावे २० अथनेत्रजतन तथातसनिवारनु तूलका
नमेरापेकोई श्रवणमैलजिहिलागाहोई २१ घसेलारसोंमांसहथेली अंजन
द्दगहरैविथाघनेरी २२ दोहा सीतलअंगहिव्यापई श्रवलरूईतिहकाढ तासु।
घानहुरयहरै उछलहोयतनवाढ २३ अथद्वादसरासदेहमधवर्ननं चोपई उतपत
प्रलयअंडकेमांही सोसबद्वारसरासकराई कोइकउत्तममध्यमकाई जाकोंजेसो
गुनतैसोफलहोई २४ येसबरासआकासनिवास सातोंस्वर्गवाटमैतासबीसआ
ठतहांहैअस्थान आठाबीसनक्षत्रपरमान २५ जागुनताअस्थानकहोई व्यापै
नक्षत्रदसागुनसोई तेसबबारहरासलगाए असपुननवग्रहतहांफदाए २६ व
स्यनहीकछुइनकेहाथ गुनअस्थानग्रहैसबसाथ सुसमारहसर्बवांधे फि
रतपवनबसचक्रहींसांधें २७ अस्थिरहोईनकरनबसेरा स्वर्गाकारसबएकेफे ६
रा बरीसाठदिनरेंनकहोई तामैफिरतसकलनभआई २८ दोहा द्वादसषटदिव

समें अरु बट भोगे रातके तक घट का अधिक गिनके तक हीन कहात २९ चौपई कोइक पुरुष कहिये कोई नारी एक मास लग भोगे सारी अस्थूल रास क बहु दिन आवै घटें रीतन तब दिवस बढावै ३० जो घट दीरघ आवैरैन वाढे निसाही न दिन ऐन लघु दीरघ जब होई समान अहोरैनन तब समता जान ३१ नहां नव ग्रह करत न सास भोगत सर्व द्वादस रास कोइक अग्न कोई कफ पत्यात कोइक सौम्य कोई पुन घात ३२ क बहु क रासन क ग्रह आवै कहुक त्रिय वार दिषरावैं क बहु क षेच औरघट जाई एक रास मैं सकल दुहाई ३३ कोइक आपमें प्रिय प्रिय हितकारी कोइ क महा बैर संचारी कोइक नई षन बैरी मानिये दिष्ट परस्पर कोई जानियें ३४ दोहा जो गुन जा अस्थान को उत्तम मध्यम नीच ३५ चौपई जो इनकी गत नीके जानैं भूत भविष्य उभय चित्त आनें जो कछु यह विस्तार ब्रह्मांड सो सब प्रगट मानस के पिंड ३६ मेष सीस वृषभ ग्रीवा कहियें मिथुन अंस युग पानी लहियें क के रूप छाती अस्थान सिंह उदर कन्या न भ जान तुला रास कटि वृश्चिक गुह्य न विकजा प्रगट ही स्वरूप पिंडरी मकर कुंभ पद दोई मीन भ्रुवन अरु सवन स जोई ३८ दोहा एकांत जु आसन करें वचन ज्ञान नर भवन न परैं तहां उजेरा वर्जन कीजे संग्रह सदा अधेरा लीजे संत असंत संग सब त्यागें चिंता सोच न चित्त अरा जे सब कारज संसारी तजें आसन बैठ निरंजन भजें ४०

स्वरो रूध्यायियौंआपुरसुरहैं आसनतेंउठअंतनचहै मनकोध्यानकरैठहराई अंतल
७ षैस्वरूपयाभाई ४१ दोहा जोकछुरंगनरूप विनातिहांप्रगटसबहोई नभनछत्र
7 ग्रहरासकीतांहांसर्वगतहोई ४२ चौपई जबअंतरगतसबैलषावैं तबसबगति
ब्रह्मंडकीपावैं भलोबुरोसबआगमजानै स्वर्गभूमपातालबषानैं ४३ सतगुरु
कृपाजाहिपरहोई तबयागतकोंजानैंकोई ४४ इतिनछत्ररामजोगग्यानसाधना।
अथचौरासीआसनक्रियाविधान चौपई प्रथमपवित्रदेहमनकरै आसनसाध
ध्यानअनसरै विनआसनतनहोईनशुद्ध असीचारजाननतजेबुद्ध ४५ तामधबी
सएकअबधरैं सबनमध्यउत्तमपतयेकरै एकएकसीसाधनऔर गुनअनेकसा।
धैंसुभठौर ४६ भोजनप्रथमकरैं लघुसदा बैठएकांतसंगतजजाहां कोईई
कसमैकरैठहराई ४७ हंसकर्मासन दोहा हंसकर्मसाधे प्रथमभस्मअंगअव
लाय वज्रकछोटोबांधहृढसंगतकोंगतजाय ४८ चौपई हंसकर्मकाआसनदे
ह कहोनामसहजासनयेह पीठसीसकूटसमनाकरैं पिंडरनऊपरपिंडरीधरैं॥
४९ वामचरनकीयेजंजोन विवकरऐंचजपैंधरमौन ५० निर्गमस्वरकोंकहि
येहंस जबप्रवेसहोयसोहंस हंसरूपकोंकहियेआत्मा जोसोहंसहोयपरमात्मा ७
५१ हंससोहंसएकगतसाधे होयप्रकासनिजनभधे निर्मलहोईअनभवतिहां।
जागेंजड़ताव्याध्यमलिनताभागे ५२

इतिहंसआसन अथक्रमासन चौपई अलषकर्मदूजैंआराधैं क्रियापैठनप्रथम
साधैं भेदनआसनकरयोजुग्राई प्रथमदजानूबैठकथाई ५३ दोहा मुष्टवामकर
बांधकेदाहिनजामपरथाप दक्षिनकूहूनीतासपरधरैंकछुकूतहांचाप ५४ चौ
पई पुनकरदाहिनमुठीबंधावै ठाडीतिलैंसहतबललावैं युगुतचतुरकरकटिनक
राई नामअैंयपीठसोलाई ५५ वासअगनामसोजानें तिहांतेपवनमरुइनीआनैं।
होयलीनआज्ञासबनासै स्वरूपअलेषतहांपरगासैं ५६ इतिनाडीसन अथष।
षटीकर्म कूमठासन चौपई षषटीकर्मकरैंजोसंत बैठेआसनकमठतुरंग वामजा
नुपुनबैठेसोय तलुवापरभ्रतरतलहोई ५७ चरनदछन उरवीपरधरैं दक्षिन
जानुजुराठोधरैं दक्षिनपगकीपडीभली रहैधामपदअंगुलनरली ५८ दाहिन
जानुपरदाहिनहाथ वामपानकेवामेसाथ हरहरशब्दवचनउच्चारैं दछनतेउ
तरअनुसरैं ५९ दोहा फिरआवैंदीसदाहनी वारहोयकछुदंध मस्तकसमअ
डूनिहिकरविंगकरैंअसकंध ६० चौपई ओंठभिन्नकेबांधैदंत तापाछेकेकठन
तुरंत ग्रीवासीरफूलकछुआवैं हृदयपवनकेउपरचलावै ६१ इहविधजोगी
करैं विचारहोयलीनसमाधमझार ६२ इतिकमठासन अथनिरंजनकर्मगर्भा
सनक्रिया चौपई कर्मनिरंजनसाधनठानें तासक्रियागर्भासनमानें मातगर्भा
जोंबालकरहें नाप्रकारगर्भासनलहैं ६३

स्वरो
८
8

भामचरनरक्षलपगउपर चतुरजुगलपुनयेडीदू पर मस्तकजुगलजानुके।
बीच कुहनीबीच पांवरकेनीच ६४ आनाभपीठदिसजंहा उभयपानभवन
नपरततहां उभैसब्दनाभतेंबीन जगमगजोतनिरंजनछीन ६५ रोकेपवनउ
दरमेफेरे उर्धचढायकेअधनउतारैं ६६ दोहा वादरोययहजतनकरध्यानें
निरंजनलाय गोपप्रगटब्रह्मांडमैंदेखैंईश्वसुभाय ६७ चौपई कामक्रोधनिद्रा
भयछूटैं भूपतग्यानमलिनतालूटे जीवसीवदोनोंइकहोई साधकयहवि
धसाधैकोई ६८ इतिगर्भासन अथचक्रीकर्म चौपई चाहेजगतएककिनरे।
पे चक्रीकर्मविधानविसेषे जोतचक्षूहोवेअधकाई दिष्टमध्यसबासिष्टस
माई ६९ बैठकतासुजानकरजुगकरजोरनाभतरधरै पीठग्रीवासिरसम
तालीजे दिसासर्वअवलोकनकीजे ७० वर्षएकजोप्रातउथाई एकअगम
नक्रियादिषाई गुनअनेकजोप्रगटलषावैं योगीअगमबुद्धनवपावै ७१
अथनौलीकर्म चौपई नौलीकर्मकरेजोसंत आसनपाथलीबैठएकंत उभय
पानजुगजाननधरै अरुकरपीठबराबरकरै ७२ दोहा नाभआपनेथोंतटीउ
लटावैजुगतसंम्हार बलकरतबथंभनकरै इडापिंगलानार ७३ चौपई जबा ८
विधिग्रंथपरैंठहराई अनभयगततबउपजै आईनोंसुरयततहांपरगासे जोम
नएकयाअभ्यासे ७४ ना

इतिनौलीकर्म अथगोरषीकर्म चौपई कर्मगोरषीइनीविधान बैठकतहांप
द्मासनजानतलुवाउभैपरसपरकरैं यडीबिचअंडनतरधैरै ऐंचैहाथजुगजु
परपीठ लषैध्याननासाग्रदीठ मस्तककछुअधोकोंकीजे थोरककगातहाल
वोलिजे ७६ रसनादंतअधरसबबांधै जबलगपवनउर्धकोंसाधै करैंबहुत
बलसाधकधीर त्योंमारगनीकसमीर ७७ तातेउगानउर्धफिरलेइ प्रात
सांझयामेमनदेई अथशीतलीकर्म चौपई सीतलीकर्मकरैचितलाई बै
ठेमांहाकषीलासनाठाई प्रष्टदक्षुपगबाईजांन करकैनिकटबराबरआन
७९ पृष्टवामपरदक्षिनअंगु जंघमूलकूंषिकेसंग करपरकरपिंडनपर
राषे सनमुखनाभसंभूयोभाषे ८० दोनोअधरजबराषेषोलें कुंभकपव।
नवारमुषकरे सकलअंगबोलेअनुसरैं ८१ अधरबांयंनासामुषछूटै स
नैसनैंजबलगसबषूटैं साधेअधकर्मपवनमूषमूकें योकषूक्रियाजुक्तन
लिचूकें ८२ यातेंअधिक नलिनमगत्यागे जोध्रुष्टक्रियाचित्तअनुरागे उद
रसुद्धजोचाहे संतमलद्वारकरतजैलुरंग ८३ दोहा मुषमारगपूरककरे चे।
मारगचार अनवनगुनतहांपावई सीतलीकर्मसभार ८४ इतिसीतलीकर्म॥
अथभुवंगीकर्म चौपई कर्मभुवंगामआनेचित्त तासुक्रियाजोसाधेनित्त बैठ
दुजानंसुषकोंबांधे नासारंध्रपवनकोंसाधे ८५

स्वरो
२१

ऐंचसमीरनाभतरजावै फिरवलसहतऊपरकोंलावै द्वामद्वारजबपहुचैसोईस
नेसनैनबमूत्वनहोई ८६ जबनाभीकेनीचेजाई तेहीक्रमफिरऊर्धचाजई चार
दोईऐसीविधकरैजबलगसाधकसुरकोंधरै ८७ सक्तप्रयानपवनकोंराषैपा
छेसनैनाकमगनाषै इहविधबहुरपूरकरलेई वाहीक्रियाचित्तफिरदेही ८८।
साधकक्रियाहाथजबआवै दिवसएकद्वैपवनरुकावैं बहुरोंअधिकपैंचसु
रराषै दिवसपांचघटबाहरनाषै ८९ दोहा भईदाजदानरआवकीश्वासापवन
प्रमान साधैइहविधथंभईदीरघआयुबढावन ९० इतिभुवंगमकर्म अथपूर
कक्रिया चौपई पूरकक्रियाकरैजोसंत हलकोंतनसबहोयतुरंत जेसैसूततनी
रउनराई ९१ बेठकसहजपालथीबैठे पूरकपवननाभमगपैठे ऐंचपवनकों
उदरहलावै ९२ नासासुरकोंऐंचतरहै सकलदेहमेंमिलायोचहै जबसबतन
मेंपवनसंचारै तनअउठआनकायाविस्तारै ९३ एकवर्षनितप्रतइहकीजै साधै
जुक्तअनंदहीलीजै भूमसमाननीरपरजाई सबदेहनकीव्याधनसाई ९४ इति
पूरक अथत्राटकर्म त्राटककर्मसंम्हारियें आसनपालथीलेई अंगुलीवीचक
रषेंचकैं पिंडसरनऊपरदेई ९५ चौपई ऐंचेश्वासकुंभकहीठानें जबलगुपवन ९
तालुकाआनें तिहितैंऐंचमस्तकहीजाई नाकश्वांसएंचतअधिकाई ९६ राम।

अंगुष्टातर्जनीनामजुलहैं नासागहैंरहैतवताई जवलगपवनमाथेठहराई ९७ मि
टेकुबुद्धमलिनतासबई चित्तकोभर्मजायपुनजयें अंतविज्ञाननहांपरगासें ख
गेभमपुनसर्वअभ्यासें ९८ इतित्राटककर्म अथखेचरीमुद्रा चौपई कर्मखेचरी
कोआरंभ यातेंहोयपवनकोथंभ रंध्रताल्कुकारसनामंदे जायनवायुदेहमेंरूदे
ताकीक्रियाकरैयहरीत वचनश्रीगुरुकेकरपरतीत रसनाप्रथममासषटलावैं से
चयलेवननामजोपावें दोहा तासंगमिरिचरलायकेंमलेदुवारामित विधिकर
सोंदोहनकरैंअस्थिरराषेचित्त २०० चौपई वस्त्ररभीजेंजीबपुनदुहियेबाहर
ऐंचिदुढ्ढकगहियें बाढेरसनाकोमलहोई बाढलमोलनसाधकसोई करअंगुष्ट
तर्जनीजोनोंराषेवडेदुवोनषतोनां रसनातलेंसोरीहूंनाम एकअरुनअरुदूजी
नाम एकअरुनअरुदूजीस्यांम २ तानवकोरदोनोंरगकाटैं सनेसनेनिर्मलवि
धानेआटैं बहुधारसनांमुखसोंकाढैकोमलहोयलंबिकाबाढै ३ अर्द्धनासका
पहुचेंसोई साधकतबहीमनोरथहोई प्रथमहीपूरकमारुतरोके तालूरंध्रजी
भसोंरोके ४ सबरसनातबरंध्रसमाई छूटेंनपवनरोकसबजाई ग्रीवाहाडठो
डीसोंबांधे रोकसमीरखर्षलगसाधे ५ इतिखेचरीकर्म अथसिद्धासन चौपई
सिद्धासनआसनसबठानें बैठकतासदुजानूमानें चरनएष्टजोदक्षकहावें वा
मचरनकेतलुवालगावैं ६

स्वरों
१०
10

आधोनलएडीदिसजंहां डुयोअंडलरदावेतिहां राखैं बीजमनकी नारी बिबजा
नकरधरैपसारी ७ तालूरंध्रजोरसनारोके ताकीसुधपुनतहांअलौमिटैं अ
चेतचेतचितभारी नासेंछुधापिपासासारी ८ जरयोवडनभ्रतुजुत्रासैं सक
लबंधतेंछूटैंसोई पदवीअलखनासकीहोई ९ जबयहविधपूरनकैंसाधैं भ
पलोकदीअआराधैं भ्रमभ्रमगतनवएकेहोई गुरुप्रसादजोसाधेकोई १० दोहा
सिद्धासनकोंसाधकैंलेयनिरंजनलीन दसमद्वारअस्थाननभप्रगटजोततहां
चिन्ह ११ अथटकटकीक्रिया चोपई क्रियाटकटकीउमाकही पदवीसाधसंत
जनलही साधकप्रथमप्रातउठाई बैठकप्राचीदिसाकुराई १२ दृष्टपसारल
षैआकाश होवेपवननैनअभ्यासें कछुविलंबकेमूंदैंनैन पुनपसारदेषैन
भतेंनैन १३ जबलगसूरजदरसदिखाई तबलगसाधकक्रियाकराई निर
मलदृष्टजोतबहुहोई गुनअनेकसाधेजोकोई १४ अथकुंभककर्मचोपई
कुंभकभानकहोसमुझाई जिहीप्रकारसाधनकथाई प्रथमवायूसबअंगन
जैती ऐंचेसोइपूरकरतेली १५ सनेसनेंजबमाधेआनें जोवसबपवनऊर्धकों
जाई तालूरंध्रतबरसनानाई १६ इतिकुंभक अथसभासन आसनसभाआ
रंभैसंत उपजेबहुबलसिरातुरंत मजागीवपष्टबलभाई अतिवेसाउदेहदृढ १०
सारी १७ पांचकअन्नओरसबभोजन होयतासकोसाधेसोजन दक्षनचर
नपिंडरनताई वामजंघपरलेठहराई १८

इहविधवांमदाहिनदिसधरैं धीरहिधीरें क्रमअनुसरैं प्रथमआरंभकठिनतालो
जे ज्योजससहैंतासुअनुरागे १९ पीठकठिनराखैंपुनधरी उभैपानबिबजांघन
धरी अरुपुनभुजाकठिनताराषें करिरोमांचसंभुयोभाषें २० योजोयाआस
नचितलगावैं प्रकृतितीनकंतुरतदबावें बोलेथोरभक्षलघुषाई सोवैंअलप
निंदसबजाई २१ दोहा लघुभोजनलघुबोलधोलघुनिद्राजसहोई सहभोइनता
पुरसकोंबुद्धप्रकासकहोई २२ इतिसभासन अथचक्रासन चोपई चक्रासनपु
नबहुरोंकहियें ताकीत्रिजुसिरधरलहियें पालथीबेठदक्षकरजोंना वामकं
धदिसागरीवातोनां २३ वामपानदाहिनदिसलीजें बिबकरगरीवाबंधनकीजें
पीठकठोरकरेंनिजुरहियें नामअलषकोंसुषकरगहियें २४ कोटयवेसीना
सरनासैं छाजनअजितवरनपुनजासें औरव्याधपिंडतेंजाई कायानिरमल
सुभदिषाई २५ इतिचक्रासन अथथंभासन चोपई थंभासनथंभैजोसाधता
कीमहिमापरमअगाध बेठपालथीआसनकरें पिंडरनबीचउभैकरधरें २६
करभुजदोषअंदरिष्टकीजें रसनानामअलषकोलीजें पृथवीनीरअंसघट
जाई तेजसरूपगुनअधिकलहाई २७ इतिथंभासन दोहा बज्रासनविधसा।
धियेपालथीबेठकबेठ विवकरगरीवाबांधियेपिंडरीजंघमेबेठ २८ चोपई॥

मस्तकरहै भूमके माहिं साधे क्रियावैठकर क्यांही देवपरी नर उरनहिं होई त्रास
चतुर्पद जंतन कोई २९ सभउतपात मिटै भय जाई जो आकास भूमि पर आई ३० इ
ति वज्रासनं अथ सुमासन चौपई पदवी ऊंच लहे जो संता विध कर मूंठी बंधन
करे ता पाछे बहु मी पर धरै ३१ उठै भूमते अंतर रहै रचना अलख बतिहां अथ गहै।
वामचरन को अंगुष्ठा लेई बाईं कुहनी भार सु देई ३२ ऐसी जुगत साधरट लावै ना
म अलख जी वसों गावै देही देव होय तानर की कछु संख्या नहि व्यापै उरकी ३३॥
स्वर्गपताल भूंम सों गामी जो यह क्रिया होय अब सामी इति भून्यासन दोहा इ
कीस आसन भेद जो तेसब कहे बुझाई सो गिरजा अब देहें कि पवन क्रिया चित
लाई ३५ इति श्री पवनविजयास्वरोदय भाषा विरचिते पिंडज्ञान अभ्यास जोग
साधन वर्ननंनम् अथ प्रश्न विचार वाम दक्षन स्वर कथनं चौपई बहुर प्रश्न की
हो गिरजा नंदनै ते प्रभु कीने कृपा अपार भाषो पिंड ग्यान विस्तार ३६ अब प्रव
ते जो कछु काम भाषो होय मोह अभिराम रासन क्षत्र गनह वार अरु कथा चित पा
तथुन जोग विरुद्धा ३७ सो सुर भेद साषिये जे संक्रिया जुगत प्रभु भाषो तैसें भा
षत संभु गवर प्रत वाला दयासिंधु जगत के ताता देवी सुनो स्वरोदय ग्यान जो तें
सबे ब्रह्म को ध्यान जो दैवज्ञ होय स्वर सुरहीन मानो मंदर नाथ विहीन ३९॥ ११

नमतसीॐ तिसहतनिकंदन ५

चक्रहीनसांसजोहाई जोनरहीनसीसचिनसोई सोस्वरसाधकाजेसबकीजे।
सकलमनोरथचेदितलीजे ४० दोहा चंद्रसूर्यदोईनासकाकरतसर्वेदावास
ईडापिंगलासुखमनानाडीतीनप्रकास ४१ चौपई नाडीवामअंम्रतसंस्थाई।
विषमदक्षउतपातकराई मध्यानष्टकाजसमजामें करयसमाधब्रह्मकीतामें
४२ रवजुविषमसबईद्रकंहीये भानपुरससिनारनलहिये निर्गमपवनहुआ
ससिवाम भानप्रवेशदोऊसमनाम ४३ भूषनवसनओरअलंकार दानविवा
हमंदिरविस्तार दरशानस्वामीगुरुदेव ग्रहप्रवेशठाकुरकीसेव ४४ कृषीआ
रंभबीजकोबोवन संग्रहदरव[illegible]नारकोयोवन जग्यआरंभदेवस्थापन दीक्षा
ग्रहनमंत्रकोसाधन ४५ रससाधनविद्याआरंभ मोक्षतीरअरुकीजेथंभ वा
जीकरनकलाकोपावन जेसुभकर्महर्षउपजावन ४६ दोहा वारीबागलगाईए
अरुफूलवारअनेक तालकूपवापीसकल देवालयेहरटेक ४७ चौपई गीतना
दनृत्यअरुबाजन देषीयदुषतजाईकोईसाधन निधअस्थापनप्रथवीकीजे।
जुरगदद्रुषितमरकछुदीजे ४८ चंद्रप्रवाहइडासुरलीजे जेतेसुभसभकारजकी
जेहोयसफलउतपाननहोई काजसाधसुरकरेनकोई ४९ सभुभ्यासविवाद
करोरी जुवाषेलकरोरी जुवाषेलषेटकअरुचोरी कुंजरसकरअश्वरथवाहन
लिषनजंत्रमंत्र निरवाहन ५०

विषसाधनअरुवाहनगाहै रंतिवाजमोलजबचहै अरुपुनहुंदसहषमोदासी
लियेंमानस्वरहोयविलासी ५१ मैथुनभोजनअरुअस्नानकीजे युद्धरछनस्व
रजान सयनसेजकीजेब्यवहार साधनभूतदेवसंचार ५२ मारनोचाटनमो
हनस्थंभन ५३ दोहा सागरसरितातरनकोऔरक्रूरसबकाम तेसबसाधन
कीजियेनाडीपिंगुलानाम ५४ चौपई जोसुरनाडीबहैइकरीत करियेनकाम
मानपरतीत कीयाक्रूरसौम्यकिनहोई निसफलजायेकरेजुकोई ५५ इतिशु
भाशुभवामदक्षिणस्वरविचार अथसाधारनप्रश्नविचार वामदक्षनस्वरप्र
मान चौपई जोकोईप्रश्नकरेनिजआई दीजेवच नग्यानसुरपाई दुष्टब्य
वहारदुषारी चोरनृपतकोडरभारी ५६ पूछतजोस्वरपूरनहोई
उपजै त्रासकहैभयसोई चंद्रकेरसमअक्षरजानो विषभाककरएकेप
हचानो ५७ जिंहीस्वरप्रश्नकरैनरआई पूरनस्वासमनोरथथाई नाडीशुन्य
काजसबनासैं अक्षरविमकीपूरनभासै ५८ जुद्धहोयमनघउपजैभारी पशुम
नुष्यनृपपक्षिभिक्षारी ताकोप्रश्नजोपूछेआई प्रथमनामपूरनजबपाई ५९
जोस्वरप्रश्नबंधउपजावे अंतनामकोअलजयपावे ६० दोहा दिष्टहुतेजननष्ट
हुवकीवाहोयबिदेस केतनभंगसंदेहजीवननहींमुड़कोलेस ६१ चौपई ॥

पूरननाडीप्रश्नजुकरै कुशलदेहसंदेहनधरै पवनप्रवेससमयजोबात अ
तआनंदहोयकुसलात ६२ निर्गमपवननाकलैंजोइ मधिमफलताप्रश्नन
कहोइ प्रश्नकेरजोअक्षरउनें पूछनकही नाडीकेकोनें ६३ अतिविपरितहोय
पुनघानी तासुप्रश्ननहींजीवैधनी जोपसुजीवगहेकोइ आवैपसुअरुढना
मारगजावै ६४ विनसंसैयनरजीवतहोइ प्रछकप्रश्नपूछैजोकोइ प्रथमहिं।
दिसासुरभन्यपैठै पुनब्रन्नोहिंउठपूरनवैठैं ६५ मर्छितवंतभयापुनजीवसुर
साधकसुरउछेपीय चंद्रस्थानहोयजोवाइ प्रछकसूरजवैठेआइ ६५ रोगी।
मरैवेलनलागैजोसतवैघताहीअनुरागै ६७ रोल नाडीपिंगलावहतपहप्रछ
कसमघरहोइ जोअनेकरक्षाकरैजियनरोगीसोय ६८ चौपई नाडीजीवदुखी
कीवात पूछततासुआनकुसलात जीयेसोइहोयसुखभोगी ग्रसेंअनेकरोग
सेरोगी ६९ लाभअलभजायजयहोइ तासुप्रश्नपुनपूछेकोइ रीयससमारग
होइप्रमान वृक्षतजेसवपरमसुजान ७० अथगवनविचार चौपाई दूरगमन
शाशानाडीकीजे हरेविघनसुषहर्षजुलीजे समयप्रवेसभानसुरनीका मित्र
उहोतसत्रुसबफीका ७१ वामतेंजोदक्षनआवे केदक्षनसेवामेजावे ताको
नामसंक्रमनकीहिये सकलकर्मदासोसिद्धनलहिये ७२ वहसुरपलटसंक्रमन
होय सोपदअगमधरेजोकोइ तासुजात्रासुफलवषानो सकलसिद्धताकारनुमानो
७३

स्वरो
१३
13

दोहा जोसुरहोयचंद्रघरचारयामपददेई तीनतत्तनअरुअग्निकोगमनआ
ज्ञालेई ७४ चौपाई पूरबउत्तरदधसुतवासा पछमदक्षिनभाननिवासा प्रा
चउदीचचंद्रनीहिगावै जामपरतीतभाननहिरवै ७५ जामप्रतछद्रापरवा
ह प्राचउदीचपिंगलाआए सनमुषचंद्रसूर्यजोचले होयहानभयविवकर
मले ७६ युद्धविचार चौपाई वायेपुष्ठेअघातिहिठोर इडाप्रवाहमेंदिरससगो
र दक्षननीचपीठजोहोई नाडीपिंगलाराषघरजोई ७७ जोदेयकटकपरस
सपरसले अघपतसेनःग्यानसुरकरै जोसुरनाडपिंगलाहोई अथअन्यक
रजीतेसोई ७८ जोसुरइडानारमेंजावे आपुनसमुनपाहिलेतानें प्रथमश
त्रुजवशासप्र[illegible]हारे पुनपश्चातआपतिहमारै ७९ दोहा जोविषअधपत
सेनकेजोसुरहोयसमान ओजयपावेवहबलीकेविरंचपरमान ८० चौप
ई आवनकटकसुनोकहुलोग मिथ्यासोचननजोगकरेप्रश्नआइनरको
ई म्रषाभन्यपूरनफलहोई ८१ अथराजातथाश्रेष्ठदरसन चौपाई जोनृप
तसिद्धदिगहोई ताकरआपननामगनोई ओरअंकफलसवआवे सूरजसु
रमेंताहांसिधावें ८२ सोईचरनप्रथमअगेराषे तीनपेंडसमतासोनवे जोव १३
हुअक्षरआवे उनाससीसुरचरनवामपगदूना ८३ तहांजायतवसन्मुखहोवे

तवपिकरइडापिंगलाजोवे बोले वचनसुरजसभयोना ससिसमीरमेकीजेमौना
८४ अथवारतिथ्यविचारः चोपई जो सुरहोयप्रातहोईसंचारी सोईचरनधर
उठसभारी दिससमसतहर्षसोंकीजे जहांजायसबकारजजीते ८५ दोहा सात
वारतिथसप्तनव द्वादसरासपरमान तेसबसरकोभोगवे विरलापावेजान ८६
चोपई सोमसुक्रगुरुइडावषाने मंदभानरविस्वरोदयजाने जोयहहोयरंध्र
नासकाबहे ताकोवारचंद्रसुतलहै ८७ जोदुहुंसुरपुनबहेसमान चरनदोयपध
रउठप्रमान आनवारसुरआनेंचले मनअततनमेहेप्रतपत ८८ आरंभकृष्ण
पक्षअमावसः थंभ प्रथमचंद्रपाछेरविजाने तीनदोयतिथतीनकोमानें ८९
कृष्णपक्षसूरजअधिकारी शुक्लपक्षससिवहेउजयारी जोससिसूरमेंसूरसका
से केरविससिसें चंद्रअभ्यासें ९० अतिउदेहुगहानडुपजाई चित्तउचाटकछुन
सुहाई कंन्यामीनककेवृषलग्ना वृश्चिकमकरछाडससिमगना ९१ दोहा मे
षसिंघधनमिथुनगनतुलाकुंभपुनहोय येछहसबकीलगनसुभरूसतपा
उतकोई ९२ चोपई वामप्रवाहलगनससिकीजे दक्षनलग्ननरवकारजकी
जे प्रातउदेमेषतेजानें जिसकेअंतमीनकोमानें ९३ एकएकतिहलगनप्रमा
न घडीपांचतिनभोगवषान साठघडीदिनरेनडिढाए द्वादसतहासंक्रमनपा
ए ९४ जोससिलगनपिंगुलाआये दक्षनकारजतुरतनसाधे सूरजलगनइडा

आयुविचमासलगा अथकनजीवेअनेक ७ चौपई सप्तबीसदिनवहेनिरंतरमे

स्वरो॰ १४

ससिसुरसुकृपक्षसुभकीजे क्रूरकारजरवमोहें लीजे वामदक्षिनहै सुरकाहि
ये तापरवाहकोनिरनोलहिये ९६ अथसुरभोग जोसुरवामचारघटवहै अचिं
त्ययस्तकछुप्रापतलहे जोपुनघटीआठछुहुभांत पावेवस्तहोयजियसांत ९७
दोहा घरीचतुर्दशजोवहे उपजेपरमहुलास अहोरैनइकभांतजोकुलतेअधि
कविलास ९८ चौपई घरीचारदक्षिनसुरचलाई चिनभ्रमकछुवस्तुसोलहा
ई सज्जनकलहघरिछैभासे घटीआठकोईसज्जननासे ९९ वहेघटी [illegible] दसतन
दुखपावे द्वादसवहे आईभ्रतसिरघालतिहिंगहे ३०० विषघातकोप्रश्न चौपई॥
जोकाहूविषभक्षनकीन्हों केभुजंगपुनकाटेकीन्हों किंवाविछुरडंकतिहमारा
१ औरेविषपुनभषैअपारा ताकाप्रश्नजोपूछेआनी दीजेउत्तरविविसुरजानी
पूरनमध्यदूतजोपूछे जीयेसायविषहोवेछूछे २ खालीअंगजहांसुरनाहीं॥
विषग्रासेतिहिंप्रानसमाहीं अथकालज्ञानसाधनविचार चौपई दोयदिवस
सुरएकैभांत नाडीभानुजुदक्षकहांत छिपतआयतातेंकछुहोई यहविचारजा
नतुबुधसोई पांचरातदिनरविस्वरजानें आयुवर्षत्रियताकीमानें जोदसदिव
सरैनयहपालै वर्षबीचसोगासेकालैं जोदिनवीसरैनइकहावै नारीपिंगुला। १४
होयवहावें ताकीआयुनारहेंषटमास प्रानअधिकदिनरहेननास दोहा अहो
प्रकार ८ एकउनदिननतीसवहाईतीरपूरनिसवासरनारीदिवसदोयकीआयुवि
चारी ९॥

है अरुतीस दिवस परवाह नाडी पिंगला रव ओगाहा अहोरेन इक जीवे कोई यह
विचार नर पावत कोई १० वहे अषंडत दिन ते तीस ताकी आयु होय सब षीस नाही
दिवस प्रान संदेह आयुहीन नर त्यागे देह ११ दिवस भान निस चंद्र प्रवाह मास ए
कलग हो य निवास वहैं निरंतर दोनो नारी आयु तास षट मास विचारी १२ अथ
गर्भ प्रश्न दोहा जो सुर होवे भान घर तिही निस पूछे दूत भाग वंत निरविघन सो हो
य गर्भ तें पूत १३ चौपई नाडी पिंगला इह विध माना कंन्या प्रश्न गर्भ तें जानो जो सु
र दक्ष प्रचंड वहाई दूत वाम दिस वैठे जाई १४ जे वै पुत्र मात कों नासे इति प्रकार सु
र दुतिय अभ्यासे वहे चंद्र रव पूछक जात प्रसवे सुता हरैं निज मात १५ जो सुर जु
गम वहे इक रीत जन्मे दोय जान परतीत समय संक्रमन पूछत वात जानि योग
में नार कों पात १६ पृथ्वी नीर तत्व सुर जाने वायतत्व में कंन्या माने तेज तत्व पुन
गर्भ हिं द्रावे तत्व आकास निपुंसक जावे १७ पूछत प्रश्न वंद सुर होई वाम दक्ष ल
क्षि येन हिं कोई कुंभक करे एक छिन रावे ता पश्चात समीर हि भावे १८ दोहा मु
करायो सुर ससि वहे सकल प्रश्न शुभ जान जो रवि निर्गमे अतिबली प्रश्न अशु
भ सो मान १९ अथ वसीकरन दंपत चौपई जो प्रसंग नारी सों कीजे तहां पिंग
ला स्वर यह लीजे दछन सुर जो वीरज द्रावे सो जुवती सुत सुंदर जावे २० रती विलें
कामन कों वस करे आपता सुब स होय ताकी यह करनी ताही विरला जानें कोय २१॥

स्वरो
१५

चौपई सेनसमैकेकरनअलिंगन केकछुवचनकहैअतिविंगन जुवतीपवनइ
ड़ाघरपावैनायकजीवपिंगलाआवै तासअधरपरआपनारपै दोयमौनकछु
वचनभाषै नासारंध्रपरस्परकरै तासस्वासअपनेसुरहरै जुवतीस्वरजबनिग
महोयकंतसरस्वरआवैसोय जबपतिस्वासबाहरकौ ढारअैं वैंस्वासनचूकौं
२६ इकीइसवारकरैंयहरीत दुहूनमांझउपजेअतिप्रीति अथवांजुवतसेरखुष
ईतर नाडीइडाबहेससभीतर २७ पुरुषआयसूरजसुरपीवैं होयवस्यजबलगइ
सीजीवैं इहविधनारपुरुषसुररक्षै अपनेंसुरकोहरेंततक्षै २८ दोहा जबलगइं
मंत्र
पतकुसलजियकंथवसलबतांइ वसीकरनयासमनहीं जंत्रैकैरकोइ २९ अ
थअनुग्रहाकारन चौपई जोकोउकाहूकोंसुभचाहै करैजुअसीक्रियानिबाहै।
गुरुवासरतिथपक्षउज्यारी चिनरबउदै प्रातसंचारी ससबरपवनइडामेजानें ख
स्तबपठेंहोयकल्यानें ३० अथआपविध आपअर्थदुरजनकोपठे मिठचंद्रसूर
दिनकरवढै कृष्णपक्षप्रातउठाइ बिंबसूरजकोजबहीदिषाइ ताहीसमैसत्रुको
कोसे भौमवारकेसोरीहोसैं ३२ अथतत्वविचार चौपई तत्वभेदसुनगिरिजाप्या
री तोआगेसबकहोविचारी पृथ्वीअपतेजअरुवाइ गगनतत्वजोसिद्धनपाइ ३३ १५
वामदक्षसुरदोयवषानें रंध्रनासकारबिससजानें दोनोदिसातत्वससबभासैं
रसतरहै तेजतत्वउपरहोजाइ नासापुटसोंसायकराइ ३४ तीयेगपवननाकमेंजालें

शैगात पुनश्वादरंग मयी दापरवाहा जो स्वरबूझत प्रथमहीकैसे सकल अवगाहा ३५

[illegible]

यह संक्रमन गगन तहां जो लै वरन पीत चौकोनो रूप मधुर स्वाद मध्य बहत अरूप ३७
द्वादस अंगुल बहे समीर पृथ्वीतत्व कहत है धीर स्वेत वरन वर्तुल आकार जोगी न सा
द कषाय विचार ३८ गवन नीच अंगुली सोलहा तत्व निरगुन लाभ की वोरेह तीन को
न गुन रक्त दिषावे मारग ऊर्द्ध स्वाद कटु पावे ३९ अंगुल चार बहत यह याई तत्व तेज
तिहित सुकराई वरन नील चंद्र आकार अमल स्वाद पुनि तहां विचार ४० दोहा चंच
लती र्यग बहत यह अंगुल आठ प्रमान योगीना को कहत हैं पवन तत्व परधान ४१
चौपई वर्नो कार बहत सर्वत्र देह मोक्ष साधन को तत्र अवर काज सब निष्फल हो
ई सो चेगगन अंभ चित सोई ४२ पृथ्वी नीर तत्व सब कहिये तेज तत्व फल मिश्रित
लहिये तत्व समीर सु निष्फल जावे तत्व अकास हान को पावे ४३ विधि अस्कंध
अगन को वास नाभि मूल मै पवन निवास जान अंग नहि विश्राम चरन प्रवाह अ
ग्नि जिंही नाम ४४ कहिये छिति को थिर कर्मन जल के कर्म सकल चर जान तेज
तत्व सर्व कार जल कहिये मारण उच्चाटन मारुत कहिये ४५ व्योम तत्व सव वरजन
कीजे जोगाभ्यास ब्रह्म चित दीजे पृथ्वी नीर तत्व सिध पावे मृत्यु अग्नी भय पवन
दिषावे ४६ दोहा नाभ विलंब वय सुघरा तुरत लाभ जल होय हान अग्नी मारुत क
रे निष्फल भरान जोय ४७ चौपई चैत्र मास पड़वा उजयारी अर्द्ध बिंब वर भान निहा
थिर होई पूरन मेघ दुषी नहि कोई रतन अनेक मही भर रहे पृथ्वी तत्व तहां जो वहे ४८

स्वरो०
१६

[illegible]
नीरतत्वजो करे प्रवाह वर्षा अधिक होय अवगाह होय सुभिक्ष अन्न उपजाई लो
ग अरोग सब न सुख पाई ५१ अग्नि तत्व को यह बिचार वर्षा अल्प रोग विस्ता
र महगो अन्न छत्र को भंग लाभ क सुर जाने यह अंग ५२ दोहा मेषराशि विरं
ष स्वर रवि शशि दोनों ओर पवन तत्व न हा पाइए मिले नयन की कोर ५३ चौप
ई अत उतपात होय जग भारी अल्प वृष्टी छित वर्षा सारी जो कहा नभ तत्व
अभासे कारज भन्य अन्न घर त्रासे ५४ पृथ्वी आप तेज और वायु तत्व पांच
च योग गगन गिनाय पंच भूत मे आतम जाने एक तत्व पुन पंच वखाने ५५ त्वचा
रोम नस नाडी जेती अस्थि मास ये पांचो तेती ये गुन पांच मही के राषे ब्रह्मज्ञान
मे शंभु भाषे ५६ क्षुधा पिपासा निद्रा यथा आलस अरु जभाई तथा तेज तत्व
के ये गुन पांच वचन शंभु के मानो सांच ५७ वीरज रुधिर मूत्र अरु चीर मज्जा
पंचम क्रिया विचार पानी केर पंच गुन जाने ब्रह्मज्ञान मे शंभु वखाने ५८ दोहा
धावन अरु पुन बोलबो तृतीय गंध पुन जोय संकोचन रूप सारबो वायु तत्व गु
न होय ५९ चौपई राग द्वेष लज्जा भय चार पंच मोह जो करत विचार व्योम तत्व के
पांचो अंग कहत शंभु जिन दह्यो अनंग ६० पार्वत्युवाच चौपई कहहि गिरजा सु
न शंकर देव भाषो सब तत्व का भेव स्वर विचार के तत्व विचारो गुन प्रवाह रवि चं
मंडल रंग मर्यादा रास [illegible] नासा भव वल मुख अरु नैन रोके सकल न भाषे वैन ६२ १६

अंगुल सहित मले चक्षु की कोर भासे तत्व भ्रवण की ओर ओरो युक्त तहां पुन कीजै।
दर्पन सार हाथ के लीजे ६४ दोहा नाम धर्म के भ्यास को समै प्रान रुत्थाय परे सुपति
होत तत्व को मंडल भ्यास दिषाई ६५ इति पंचतत्व विचार अथ चार विचार चौपई सू
र चंद्र जे है सुर भनें तिन के चार वार के गने ओर चार में आन अभ्यासे समय प्रान ही
पवन प्रकासे ६६ प्रथम दिवस मन चिंता थाई दर्व हान दिवस दीनाई दिवस तीस
रे ठौर छुडावे चौथे वहे इष्ट दुःख पावे ६७ पंचम अधिपति को भय होई षष्टम थान
छीन लेई कोई सप्तम महारोग उपजावै दिवस आठमे मीच करावै ६८ अथ काल
ज्ञान चौपई वर्ष मास पष आदि विचारै योगीश्वर लष आयु विचारै ६९ एक रैन
दिस एक ओर वहे पवन सुर करै न मोर तीन वर्ष आयु दी जान सम दन शंभु करै जि
यमान ७० दो रैन दिन सूरज संग बहत पिंगला होय भंग वर्ष दो यति हि आयु विचार
धंध सकल तज राम संभार ७१ दोहा तीन दिवस रैन जो सुर बहै एक हि रीत वर्ष एक
ता पुरुष की रही आयु सब बीत ७२ चौपई सोलह दिवस भान सुर वहे जीवे मास स
तु पुन गहे चंद्र निकसे होय प्रवाह रव नाडी दिवस अवगाह ७३ एक मास जो वहे नि
रंतर होय मीच षट मास ही अंतर आयु हीन ता नर की होय त्रिया वसिष्ठ न देषै कोय
७४ विष्णु तीन पद ध्रुव नाहि षाई मंडल मात्र न गगन दिषाई पिंड अरु धनी रस जानें
सै नहि चक्षु होई ताकी आयु होय दिन पांच मानो वचन संभु के सांच ७७ दोहा

स्वरो
१७
17

नासादिष्टनआवहीअरुध्रुवमांझआकास सोप्रमानदिनतीसरेनाहिंपुहमपर
वास ७८ चौपई गगनअरुंधतीलषैनरसना रहेआयुदिनएकनवसना मृत्यु
रूपवायुयेतीना ध्यैएकसंगजानेछीना ७९ दसदिनआयुतासकीजानें संभव
चनजियनिश्चयमानें मूंदेचक्षुअंगुलीलावै दायेकछुकजोतबलपावै ८० अरु
नस्यामजोचक्रनदीसै अधिकदिवसदिसपुरुषनजीवै जोनरकोकहिचाहैजीत
भजेनिरंजनहोयअतीत ८१ पूरकनाकपिंगलाकरै सप्तप्रानकुंभकहीधरै
रेचकइडानाडसुरकीजे बाढै आयुबहुतदिनजीवै ८२ जुगभौंहनकेअंतरजहां
एकजाममनराषैनांहां ८३ दोहा दिष्टकरकालायकेकीजेउनमुनध्यान बाढै
आयुदिनप्रतिपुरुसघटिकातीनप्रमान ८४ इतिपवनकरीबंध धरपद्मासनमू
लपवनकोऊर्ध्वखेचकेमलकोपेरै नासाकापवनपूरकरै ततछिनइडापिंगु
लाअधहिडतारै ८५ अधऊर्ध्वपवनगंथतिहां देकरनाडीसुषमनमध्यबसैज
हां सतगुरुकृपासमाधलहै तबमोहनदासकालकोंजरै ८६ दिवससमसस
सिवाहकरै चेनदिवाकरकोंधरधाह करअभ्यासक्रियादृढकीजे जुगतसदायह
संतनिवाहे ८७ जबलगचंद्रगगनतारागनहिप्रकासरवतमकोदाहे तबलग
आयुबढेंसाधककालहूपकालकोगाहैं ८८ इतिश्रीपवनविजयस्वरोद
गिरस्वरोदपुस्तके श्रीरामजयरामजयजयराम शुद्धअशुद्धअपराधक्षमा नारायण

१७